मुख्य परीक्षा

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में वामपंथी दलों की भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन करें।

(200 शब्द)

Critically evaluate the role of left parties in the Indian National Movement.

(200 Words)

मॉडल उत्तर

भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में वैश्विक प्रभावों तथा आंतरिक परिस्थितियों ने वामपंथ को जन्म दिया, जिसका भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर दूरगामी प्रभाव रहा।

मुख्य विषय वस्तु

प्रथम पैरा

वैश्विक घटनाक्रम विश्व युद्ध, 1917 की रूसी क्रांति तथा विश्व आर्थिक मंदी (1929) के प्रभाव से विश्व राजनीति में परिवर्तन हुए तथा आर्थिक व सामाजिक स्वतंत्रता प्रमुख विषय बने। एम.एन.राय द्वारा ताशकंद में तथा 1924 में कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन तथा इनका क्षेत्रीय विस्तार पंजाब, केरल तथा आंध्रप्रदेश में हुआ। जिसका प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर भी पड़ा।

- वामपंथियों ने कांग्रेस के एजेंडे को प्रभावित किया। पिछड़ा वर्ग, दलित और किसानों की समस्याओं की तरफ आंदोलन का ध्यान आकर्षित किया तथा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के जनाधार को विस्तृत किया।
- वामपंथियों ने एक दबाव समूह की तरह कार्य किया जिसका स्पष्ट प्रभाव कांग्रेस की गतिविधियों में नजर आता है। 1929, 1936, 1937 में कांग्रेस में समाजवादियों का स्पष्ट प्रभाव रहा।

द्वितीय पैरा

- वामपंथियों को उर्वर जमीन मिलने के बाद भी ये अधिक सफल नहीं हो पाये। इनका बदलता लक्ष्य, कुशल रणनीति व कार्यक्रम का अभाव तथा भारत की आंतरिक परिस्थितियों के अनुकूल निर्णय न लेकर विदेशों से संचालित होना इनकी प्राथमिक भूलें थी।
- उल्लेखनीय है कि भारत में योग्य नेतृत्व का अभाव तथा वामपंथी नेताओं के विचारों तथा नीतियों के तालमेल में कमी रही। अपनी इन कमियों के साथ भारत के संगठित बुर्जुआ वर्ग को सीधे चुनौती नहीं दे सकते थें।

अंत में संक्षिप्त व संतुलित निष्कर्ष दें।